देव - शास्त्र - गुरु पूजन

रचयिता - श्री जुगलकिशोरजी युगल कृत

प्रस्तुति - तत्त्वचर्चा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

केवल-रवि किरणों से जिसका, सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर,
उस श्री जिनवाणी में होता, तत्त्वों का सुंदरतम दर्शन।
सद्दर्शन-बोध-चरण-पथ पर, अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण,
उन देव परम आगम गुरु को, शत शत वंदन शत शत वंदन।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट आव्हानं।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ,तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुसमूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम, लावण्यामयी कंचन काया।
यह सब कुछ जड़ की क्रीडा है, मैं अब तक जान नहीं पाया॥
मैं भूल स्वयं के वैभव को, पर ममता में अटकाया हूँ।
अब निर्मल सम्यक नीर लिये, मिथ्या मल धोने आया हूँ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वापामिति स्वाहा॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जड़ चेतन की सब परिणति प्रभु, अपने अपने में होती है।
अनुकूल कहें प्रतिकूल कहें, यह झूठी मन की वृत्ति है॥
प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित, होकर संसार बढ़ाया है।
संतप्त हृदय प्रभु चंदन सम, शीतलता पाने आया है॥२॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वापामिति स्वाहा॥

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

उज्ज्वल हूँ कुंद धवल हूँ प्रभु, पर से न लगा हूँ किंचित भी।
फिर भी अनुकूल लगें उन पर, करता अभिमान निरंतर ही॥
जड़ पर झुक झुक जाता चेतन, की मार्दव की खण्डित काया।
निज शाश्वत अक्षत निधि पाने, अब दास चरण रज में आया॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वापामिति स्वाहा॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तन में माया कुछ शेष नही ।
निज अंतर का प्रभु भेद कहूं, उसमे में ऋजुता का लेश नही ॥
चिन्तन कुछ फिर संभाषण कुछ, क्रिया कुछ की कुछ होती है ।
स्थिरता निज में प्रभु पाऊं जो, अंतर - कालुष धोती है ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् निर्वापामिति स्वाहा ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

अब तक अगणित जड़ द्रव्यों से, प्रभु भूख न मेरी शांत हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही॥
युग युग से इच्छा सागर में, प्रभु ! गोते खाता आया हूँ।
चरणों मे व्यंजन अर्पित कर, अनुपम रस पीने आया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम निर्वापामिति स्वाहा॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

मेरे चैतन्य सदन मे प्रभु! चिर व्याप्त भयंकर अंधियारा ।
श्रुत - दीप बुझा हे करुणानिधि! बीती नहि कष्टों की कारा ।।
अत एव प्रभो यह ज्ञान-प्रतीक, समर्पित करने आया हू ।
तेरी अंतर लौ से निज अंतर - दीप जलाने आया हू ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वापामिति स्वाहा ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जड़ कर्म घुमाता है तुझको, यह मिथ्या भ्रांति रही मेरी ।
मै रागी-द्वेषी हो लेता, जब परिणति होती जड़ केरी ॥
यों भाव करम या भाव मरण, युग युग से करता आया हूँ ।
निज अनुपम गंध अनल से प्रभु, पर गंध जलाने आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वापामिति स्वाहा ।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

जग में जिसको निज कहता में, वह छोड मुझे चल देता है।
में आकुल व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है॥
में शांत निराकुल चेतन हूँ, है मुक्तिरमा सहचर मेरी।
यह मोह तड़क कर टूट पड़े, प्रभु सार्थक फल पूजा तेरी॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वापामिति स्वाहा॥

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

क्षण भर निज रस को पी चेतन, मिथ्या मल को धो देता है।
कशायिक भाव विनष्ट किये, निज आनन्द अमृत पीता है॥
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल रवि जगमग करता है।
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता, यह है अर्हन्त अवस्था है॥
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु, निज गुण का अर्घ्य बनाऊंगा।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु, अर्हन्त अवस्था पाउंगा॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वापामिति स्वाहा॥

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जयमाला

(ताटंक)

भव वन में जी भर घूम चुका, कण कण को जी भर भर देखा ।
मृग सम मृग तृष्णा के पीछे, मुझको न मिली सुख की रेखा ।।

जयमाला

(ताटंक)

भव वन में जी भर घूम चुका, कण कण को जी भर भर देखा ।
मृग सम मृग तृष्णा के पीछे, मुझको न मिली सुख की रेखा ।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

झूठे जग के सपने सारे, झूठी मन की सब आशाएं।
तन जीवन यौवन अस्थिर है, क्षण भंगुर पल में मुरझाएं।।
सम्राट महाबल सेनानी, उस क्षण को टाल सकेगा क्या?
अशरण मृत काया में हरषित, निज जीवन डाल सकेगा क्या?

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

संसार महा दुख सागर के, प्रभु दुखमय सुख आभसो में।
मुझको न मिला सुख क्षणभर भी, कंचन कामिनी प्रासदो में।।
में एकाकी एकत्व लिये, एकत्व लिये सब ही आते।
तन धन को साथी समझा था, पर ये भी छोड चले जाते।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

मेरे न हुए ये मै इनसे, अति भिन्न अखंड निराला हूँ।
निज में पर से अन्यत्व लिये, निज समरस पीनेवाला हूँ।।
जिसके शृंगारों में मेरा, यह महंगा जीवन घुल जाता।
अत्यन्त अशुचि जड़ काया से, इस चेतन का कैसा नाता।।

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

दिन रात शुभाशुभ भावों से, मेरा व्यापार चला करता।
मानस वाणी और काया से, आस्रव का द्वार खुला रहता।।
शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तस्तल।
शीतल समकित किरणे फूटें, संवर से जागे अन्तर्बल।।

(ताटंक)

फिर तप की शोधक वह्नि जगे, कर्मों की कड़ियाँ टूट पड़ें।
सर्वांग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्झर फूट पड़ें।।
हम छोड चलें यह लोक तभी, लोकान्त विराजें क्षण में जा।
निज लोक हमारा वासा हो, शोकान्त बनें फिर हमको क्या।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो, दुर्नय तम सत्वर टल जावे।
बस ज्ञाता दृष्टा रह जाऊं, मद मत्सर मोह विनश जावे।।
चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी।
जग में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(देव - स्तवन)

चरणों में आया हूँ प्रभुवर, शीतलता मुझको मिल जाये।
मुरझाई ज्ञानलता मेरी, निज अन्तर्बल से खिल जाये।।
सोचा करता हूँ भोगों से, बूझ जायेगी इच्छा ज्वाला।
परिणाम निकलता है लेकिन, मानो पावक में घी डाला।।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

तेरे चरणों की पूजा से, इन्द्रिय सुख को ही अभिलाषा।
अब तक न समझ है पाया प्रभु, सच्चे सुख की भी परिभाषा।।
तुम तो अविकारी हो प्रभुवर, जग में रहते जग से न्यारे।
अतएव झुके तव चरणों में, जग के माणिक मोती सारे।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(शास्त्र - स्तवन)

स्याद्वादमयी तेरी वाणी, शुभनय के झरने झरते हैं।
और उस पावन नौका पर लाखों, प्राणी भव वारिधि तिरते हैं।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(गुरु-स्तवन)

हे गुरुवर शाश्वत सुखदर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्शन करने वाला है।।
जब जग विषयों में रच पच कर, गाफिल निद्रा में सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कंटक, पथ में विषकंटक बोता हो।।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गुरु-स्तवन)

हो अर्ध निशा का सन्नाटा, वन में वनचारी चरते हों।
तब शांत निराकुल मानस तुम, तत्त्वों का चिन्तन करते हो।।
करते तप शैल नदी तट पर, तरुतल वर्षा की झड़ियों में।
समता रस पान किया करते, सुख दुःख दोनों की घडियों में।।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गुरु-स्तवन)

अन्तर्ज्वाला हरती वाणी, मानों झरती हों फुलझड़िया ।
भवबंधन तड तड टूट पड़ें , खिल जाये अंतर की कलियां ।।
तुम सा दानी क्या कोई हो, जग को दे दी जग की निधियां ।
दिन रात लुटाया करते हो, सम शम की अविनश्वर मणियाँ ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वापामिति स्वाहा ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

हे निर्मल देव तुम्हें प्रणाम, हे ज्ञानदीप आगम प्रणाम ।
हे शांति त्याग के मूर्तिमान, शिव पथ पंथी गुरुवर प्रणाम ।

(पुष्पांजली क्षिपेत)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha